Course Code: 3MA SANS 2

Course: साहित्य शास्त्र एवं सौन्दर्य शास्त्र I

Credit: 4

Last Submission Date: April 30, (for January Session)

October 31, (for July session)

Max. Marks:-30 Min. Marks:-11

Note:-attempt all questions.

- प्र.1 निम्न की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-
 - (अ) उत्पाद्य नाट्यवेदं तु ब्रह्मोवाच सुरेश्वरम्। इतिहासो मया सृष्टः स सुरेषु नियुज्यसाम्।।
 - (ब) पूर्वसाम प्रयोक्च्ब्यं द्वितीय दानमेव च। तयोरूपरि भेदस्तु तसो दण्डः त्रयुज्यते।।
- प्र.2 नाट्य शास्त्र की विषय वस्तु का वर्णन कीजिए-
- प्र.3 निम्न की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-
 - (अ) देवानां तु भवेज्जयेष्ठं नृपाणां मध्यमम् भवेत्। शेषणां पृकीतीनां तु कनीयः संविधीयते।।
 - (ब) यथा चलो गिरिर्मे रूर्हिमवांश्च महाबलः। जयावहो नरेंद्रस्थ्य तथा त्वम् चलो भव।।
- प्र.4 संस्कृत नाटको के लक्षण एवं विशेषताओं का वर्णन कीजिए?
- प्र.5 सप्रसंग व्याख्या कीजिए-
 - (अ) धर्माथे काममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च। करोति कीर्ति प्रीतिं च साधु काव्य निषेवणम्।।
 - (ब) योडर्थः सहदयश्लाहयः काव्यात्मेति व्यवस्थितः। वाच्य प्रतीयमानारव्यौ तस्य भेदाभुवौ स्मृतौ।।
- प्र.6 ध्विन 'के' अर्थ को स्पष्ट करते हुए ध्विन के भेदों का वर्णन कीजिए?
- प्र.7 ध्विन सिध्दांत की प्राचीनता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए?
- प्र.8 निम्न की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

- (अ) आलोकार्थी यथा दीपशिखायां यत्नवा जनः। तदुपायतया तद्धदर्थे वाच्ये तदादृतः।।
 - (ब) यथा पदार्थे द्वारेण वाक्यार्थः सम्प्रीयते। वाच्यार्थपूर्विका तद्वत्प्रति पत्तस्य वस्तुनः।।
- प्र.9 ध्वन्याकार आनन्दवर्धन जी का सामान्य परिचय दीजिए?
- प्र.10 सप्रसंग व्याख्या कीजिए-
 - (अ) यत्रार्थः शब्दों वा त्वमर्थमुपसर्जनी कृत स्वार्थीः।। व्यङ्क्त काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सुरभिः कथितः।।
 - (ब) मा चत्तव्स्याभ्दवित्सर्लक्षणं ध्वनेरित्याह। अतिव्याप्ते व्याप्तेर्थं चासौ लक्ष्यते तया।।